30.12.67 ओमशांति रात्रीक्लास

इस ज्ञान मार्ग में वास्तव में बाप से प्रश्न पूछने का उठना ना चाहिए। बाप सब कुछ ही युक्ति से बताते रहते हैं, जिससे कि सब प्रश्न दूर हो जाते हैं। बच्चों में संशय बुद्धि तो हो ना सके। बाप के लिए निश्चय है कि बाप है। तो बाप स्वर्ग की स्थापना तो जरूर ही करते हैं ना। वो ही बाप समझावेंगे और क्या? बाप ही टीचर है तो पढ़ाई में लग जाना चाहिए ना। योग ही है मुख्य। योग से ही पाप कटते हैं। पढ़ाई से फिर दर्जा प्राप्त होता है ना। बच्चों को समझ जाना चाहिए कि कितना ही सहज है। बाप पढ़ाते हैं और स्वर्ग की स्थापना भी करते हैं। स्वर्ग का उद्घाटन तो और कोई भी कर ना सके। जब भी कुछ बनाते हैं तो महूरत भी करते हैं। यह भी स्थापना तो हो गई। फिर है मेहनत करना और वर्सा पाना। सा. तो होना ही है ना। कोई भी बात पूछने की नहीं रहती है। बाप से तो जरूर वर्सा मिलना ही है। बाकी उंच पद पाने के लिए तो गुप्त (ही) मेहनत करनी है। सात दिन का कोर्स लेकर फिर कहां पर भी रहे। मिलट्री वालों के लिए तो बस एक अक्षर ही काफी है। गीता में है कि युद्ध के मैदान में जो मरेंगे वो ही स्वर्ग में जावेंगे। तो लड़ाई में भर्ती होते हैं फिर वो ही संस्कार ले जाते हैं। तो जाकर लड़ाई में ही भर्ती होते हैं ना। वास्तव में तो यह है अहंकार की लड़ाई। तुम ही जाकर इन मिलिट्री वालों को भी समझाते हो। शिवबाबा को याद करके शरीर छोड़ेंगे तो स्वर्ग में जा सकते हो। सदगति तो सबकी ही होती है। भारत खंड ही बड़े ते बड़ा तीर्थ स्थान है। सबकी ही सदगति होनी है। इसमें कोई भी प्रश्न उठना ना चाहिए। आपे ही विचार–सागर–मंथन कर हल कर लेना चाहिए ना। विश्व को तुम अगर पवित्र बना सकते हो तो थोड़ा बहुत खान–पान की क्या बात है? परंतु फिर भी दैवी गुण तो धारण करने ही हैं ना। हम देवता बनते हैं तो यह2 कैसे खावेंगे। फिर आपे ही प्रबंध करते हैं। विलायत में जाने वालों को भी समझाया जाता है। बाकी थोड़ा रोज के मुसाफिर हैं। सब आत्माएं उपर से आती हैं। फिर उपर में ही चली जावेंगी। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। इनका तो किसको भी पता नहीं है। तुम बच्चों के लिए ही गायन है कि अतिइन्द्रिय सुख। यहां तो जिनको पैसे बहुत होते हैं वो ही बहुत खुशी में रहते हैं। पढ़ाई ही सर्विस ऑफ इन्कम। इसमें ही बहुत2 इन्कम है। बाप पढ़ाते हैं ना। पढ़ाने पर अटेंशन भी बहुत होना चाहिए। गरीब ही झट सरेंडर हो पड़ते हैं। धनवान नहीं हो सकते हैं। लड़ाई में भी तो .....ही खर्चा होता है। यहां तो वो कोई भी बात नहीं है। गरीबों के पाई–पैसे से ही ....हो जाता है। कोई से भी पैसे लेकर क्या करेंगे? काम में ही नहीं आवेंगे। बाप तो व्यापारी भी है ना। तुम बच्चों का प्रभाव निकलेगा। फिर आपे ही तुमको निमंत्रण देते रहेंगे ;क्योंकि तुम ही ईश्वरीय सेवा करती हो ना। यह है माया की पम्प। कोई तेज बुद्धि वाले तो झट में ही समझ जाते हैं। यह तो बिल्कुल ही ठीक है। बाप को याद करने से पवित्र बन जावेंगे। चक्र को याद करने से तो चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे ना। बाद में साहुकारों को बाबा सरेंडर नहीं होने देंगे ना। बाप तो है ही गरीब निवाज। गायन भी है ना कि अबलायें, अहिल्यायें। साधुओं ,सन्यासियों को तो गरीब नहीं कहेंगे ना। बाप तो कहते भी हैं ना कि मैं तो कल्प2 ही आता हूं। यह ... तो एक खेल है ना। इसको ही चाहे तो खेल कहें चाहे स्टोरी कहें। सुनाते हैं ना कि आगे2 एक राजा था, फलाणा था। तुम कहेंगे कि पहले तो इन देवी–देवताओं का राज्य ही था। फिर ऐसे2 हुआ। जो2 पास्ट हो जावे उनका तो कब भी चिंतन ना करना चाहिए। जो कुछ भी हुआ सो ड्रामा। खयाल तो बिल्कुल भी न करना चाहिए। फिकर से फारिग। जरा सी भी तो फिकर की बात नहीं है। फिरात (फिकरात) तो होता ही है माया के राज्य में। सतयुग में तो फिकर से फारिग होते हैं। इस समय तो पढ़ाई का ही फिकर करना चाहिए ; क्योंकि पढ़ाई से ही उंच पद पाते हो ना। जो भी तुम्हारा है वर्सा वो ही लेते हो। यह भी तो तुम ही सिर्फ अभी जानते हो ना। सतयुग–त्रेता तो कितने समय.....है यह तो और किसको भी पता नहीं है। वो तो गपोड़ा ही मारते रहते हैं ना। तुम बच्चों को नम्बरवार ही खुशी रहती है ना। यह भी समझाना चाहिए कि शिवबाबा ही पतितों को पावन बनाने वाला और मनुष्य सृष्टि का बीच चैतन नालेजफुल है। बाप ही बताते हैं कि हमारे में रचना के आदि,मध्य,अंत का नालेज है। गुडनाइट।